1	म्रक् जनः पार्गतास्त्रकालावत्ताणाष्टकमा पर्मध्यधाधारः।
2	शंभुः स्वयंभूर्भगवाञ्चगत्प्रभुस्तीर्थकर्स्तीर्थकर्ग जिनेश्वरः ॥ २४ ॥
3	स्याद्वाय्यभयद्सार्वाः सर्वज्ञः सर्वदृशिकिवलिनौ ।
4	देवाधिदेवबोधिदपुरुषोत्तमवीतरागाप्ताः ॥ २५ ॥
5	र्तस्यामवसिर्पायामृषभा अतितशंभवी।
6,	श्रभिनन्द्नः सुमितस्ततः पद्मप्रभाभिधः ॥ २६ ॥
7	सुपार्श्वश्चन्द्रप्रभश्च सुविधिश्चाथ शीतलः।
8	श्रेयांसा वासुपूज्यश्च विमला अनत्तर्तार्थकृत् ॥ २७ ॥
9	
10	निमिर्निमः पार्श्वा वीरश्चतु र्वशित्रहिताम् ॥ २८ ॥
	ulgeführt werden. Das Geschlecht aber lerne man au: 4pp 14pg
12	debre kennen.
13	Sir. 20. Die Obergotter (Arhant's) stehen im ersten kalie Gotter im zweiteln: Infe Jahrfallen dritten, die Wesen im
	सिविधिस्त पृथ्यद्त्री dene mit denen किन्निधिस्त पृथ्यद्त्री किन्निधिस्त पृथ्यद्त्री किन्निधिस्त
	जिस्तु मिनसुव्रता तुल्या ॥ ३६ ॥ ३६ ॥ ३६ ॥ ३६ ॥ ३६ ॥ ३६ ॥ ३६ ॥ ३
	Sinnesorgan; Warmer, Ameisen, Spinnen uFife pstellen, Pfanen. P
mi bi	मकावीरा वर्धमाना देवार्था ज्ञातनन्दनः ॥ ३०॥ अवस्थाना देवार्था ज्ञातनन्दनः ॥ ३०॥
18	मुद्रावा रा वधमाना द्वाया ज्ञातनन्द्रनः ॥ ३०॥
1 1 2 4	

1—4. Arhant oder Obergott (25 Wörter). — 5—10. Die 24 Arhant's der gegenwärtigen Avasarpini. — 11. Der 1te Arhant der gegenw. Avasarp. (2 W.). — 12. Der 11te Arhant d. g. A. (2 W.). — 13. Der 14te A. d. g. A. (2 W.). — 14. Der 9te A. d. g. A. (2 W.). — 15. Der 20te A. d. g. A. (2 W.). — 16. Der 22te A. d. g. A. (2 W.). — 17. 18. Der 24te A. d. g. A. (6 W.).